मैं कैसा बच्चा हूँ?

मैं खेलता हूँ अपने सपने के दोस्त के साथ
मज़ाक करता हूँ
मैं बच्चों को मारता हूँ
मैं किसी से नहीं डरता हूँ,
मैं पेड़ पर झूलता हूँ
मैं गन्दा बच्चा हूँ।

मैं कहानी बनाता हूँ
मैं पेड़ उगाता हूँ
मैं मस्ती करता हूँ
मैं बाज़ार नहीं जाता
मैं माँ से कितनी बार कहता हूँ, साइकिल लाने को
पर वो नहीं लाती
मैं रूठा हुआ बच्चा हूँ।

मैं गन्दे कपड़े पहनता हूँ
मैं पढ़ता नहीं हूँ
मैं दरवाज़े पर झूलता हूँ
मैं कुत्ते से डरता हूँ
मैं झाड़ू नहीं लगाता
मैं घमण्डी हूँ
मुझे ब्रिजेश डाँटता है
मुझे माँ मारती है
मुझे लड़कियाँ चिढ़ाती हैं
मुझे मारना आता है
मुझे मारना नहीं आता है
मुझे पर छिपना आता है।

मैं रेत पर खेलता हूँ
मैं चित्र बनाता हूँ
मैं रोता हूँ
मैं बादल को देखता हूँ
मैं गाना गाता हूँ
गीता पढ़ती है, तो मैं देखता हूँ।

बिट्टू, दस वर्ष, भोपाल

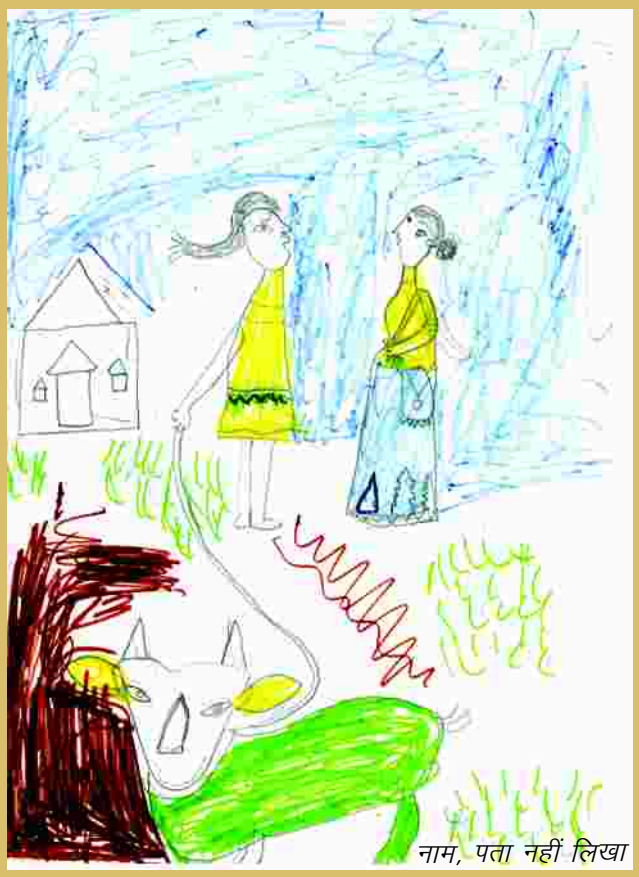

नाम, पता नहीं लिखा

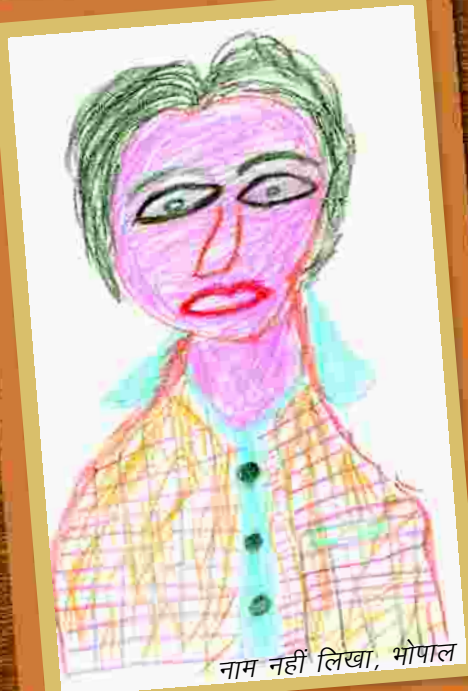

नाम नहीं लिखा, भोपाल

मेरा पन्ना

हिमांगी, सात वर्ष, लखनऊ, उ. प्र.

चूज़े की यात्रा

एक चूज़ा था। वह तारों से भरे आकाश को देखता रहता था। वह सोचता, "काश! मैं चिड़िया होता। हवा में उड़ सकता। बादलों से बातें करता। चाँद को छूकर आता।"

एक दिन की बात है। एक रॉकेट उसके पास आया। रॉकेट ने चूज़े से कहा, "चलो मेरे साथ।" रॉकेट ने चूज़े को अपनी पीठ पर बिठाया। दोनों आकाश में उड़ चले। चलते-चलते उन्हें रात हो गई। रॉकेट बोला, "सूरज सोने चला गया है।"

अब दोनों चाँद से मिलने चल पड़े। रॉकेट बोला, "अरे! सुबह हो गई। चाँद सोने चला गया।" सूरज पूरब से निकल चुका था। अब वह तारों से मिलने चल पड़े। तारे सूरज से भी दूर थे। रॉकेट बोला, "मैं तो थक गया हूँ।" "मैं भी।" चूज़े ने कहा।

दोनों लौट आए। सूरज तब तक पश्चिम दिशा की ओर जाकर छिप गया था। शाम होते ही तारे आकाश में टिमटिमाने लगे थे। चमकीले तारों को देखकर चूज़ा खुश हो गया। उन्हें देखकर वह अपनी थकान भी भूल गया।

मनोहर चमोली "मनु", अलमोड़ा, उत्तरांचल

शुभम, छठी, भोपाल

मेरा पन्ना

अशोक पिपलोदे, जगह का नाम नहीं लिखा

हमने बनाई ईंट

हम लोगों ने तालाब से चिकनी मिट्टी ली और माचिस की खाली डिब्बी ली। हम लोग मिट्टी को साने फिर माचिस के डिब्बी में भरकर चारों तरफ से बराबर किए। उसके बाद उसे खोलकर मिट्टी की बनी ईंट को बाहर निकाले और सींक से नाम लिखे। फिर धूप में सुखाए हमारी छोटी-छोटी ईंट तैयार हो गई। हमारी कक्षा में तीनों ग्रुप ने ईंट बनाए।

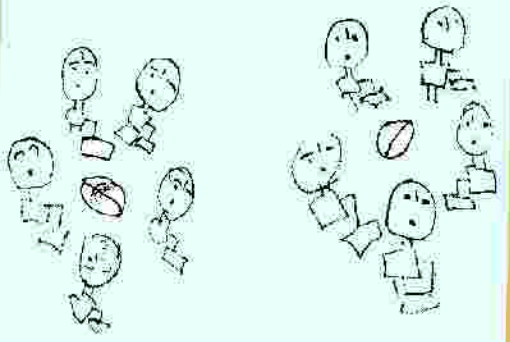

अब्दुल्ला, तीसरी, फैज़ाबाद, उ. प्र.

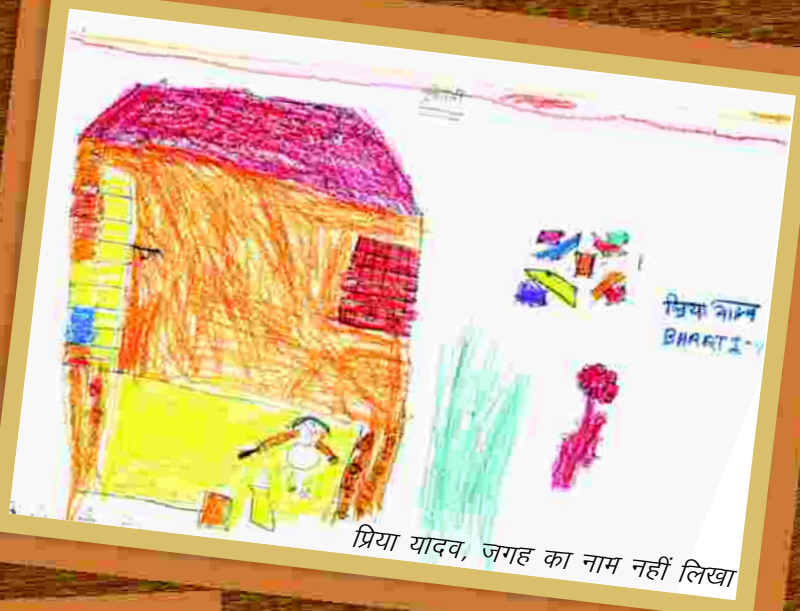

प्रिया यादव, जगह का नाम नहीं लिखा

इशान अग्रवाल, पहली, भोपाल

सोमा का गाना

एक तारा ऊपर से धरती पे आया है,
एक तारा ऊपर से धरती पे आया है,
अभी तो वो है फरिश्ता,
कल तो होगा हमारी आँखों का तारा,
अब तो फिक्र है उसकी शरारतों की,
जब वो बड़ा होगा तो क्या होगा।
हो हो हो हो ही ही हो हो हो हो।

प्रत्यक्षा श्रीवास्तव (सोमा), आठ वर्ष, भोपाल